डायमंड शाश्वत कथा माला

महाभारत के अमर पात्र

कुन्ती

उपन्यास

डॉ. विनय

<u>महाभारत के अमर पात्र</u>

कर्तव्यनिष्ठ कुन्ती

डायमंड बुक्स

eISBN: 978-93-5278-581-0
© प्रकाशकाधीन
प्रकाशक: डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.
X-30 ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II
नई दिल्ली-110020
फोन: 011-40712100, 41611861
फैक्स: 011-41611866
ई-मेल: ebooks@dpb.in
वेबसाइट: www.diamondbook.in
संस्करण: 2017
कर्तव्यनिष्ठ कुन्ती
लेखक: डॉ. विनय

भूमिका

महाभारत भारतीय संस्कृति का अन्यतम ग्रंथ है। इसे पांचवां वेद कहा गया है। अनेक भारतीय-पाश्चात्य विद्वानों ने इसे महाकाव्य मानकर संस्कृति, दर्शन तत्व, चिंतन, भक्ति की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति का मूल स्रोत माना है। स्वयं महाभारत में कहा गया है कि –

धर्मे चार्थे चकामे च मोक्षेच भरतर्षम।
यदि हास्ति तदन्यत्र यन्रे हास्ति न तत्क्वचित्।।

म. 1/62/53

[''हे भरतश्रेष्ठ! धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के संदर्भ में जो कुछ इस ग्रंथ में है, वही और स्थानों पर है और जो इसमें नहीं है, वह कहीं नहीं है।'']

और यह स्वयं सिद्ध है कि इतने महान ग्रंथ में जो वस्तु (कथा) होगी वह महानतम होगी क्योंकि कथा ही वह मूल आधार है जिससे सभ्यता, संस्कृति, दर्शन के विभिन्न आधार स्रोत सृजित होते हैं! कथा के साथ वस्तु के आधार रूप में चरित्र भी अपने गुण, कर्म, स्वभाव से लोकोत्तर होते हैं। यह मनुष्य की अत्यंत स्वाभाविक वृत्ति है कि वह लोक को इतना उठाता है कि लोकोत्तर हो जाए और लोकोत्तर को अपनी समझ सीमा में लाने के लिए... लोक का... या सामान्य बनाता है। महाभारत में ये दोनों स्थितियां विद्यमान हैं।

और, महाभारत में जिस विराट संस्कृति, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के व्यवहार की आधारशिला रखी गई है, उसका वहन करते हैं योगीराज कृष्ण, भीष्म, द्रोण, कौरव, पाण्डव और प्रकृति शक्ति में कुंती, द्रौपदी तथा गांधारी जैसी सती! इनके साथ सांस्कृतिक विकास के आरोह-अवरोह में सहयोगी होते हैं – कर्ण, द्रुपद तथा अन्य पात्र (चरित्र) जो सीधे महाभारत के रचना धरातल पर सक्रिय हैं।

इन सक्रिय चरित्रों के साथ पुराकाल के अन्य कथानक हैं जो इस रचना को भूत, वर्तमान और भविष्य की दृष्टि का आकार ग्रंथ बना देते हैं!

भक्ति की दृष्टि से महाभारत के प्रतिपाद्य हैं योगीराज कृष्ण अर्थात् महाभारत का अनुकूल पक्ष कृष्णत्व है और जो कृष्ण के अनुकूल नहीं, वह विरोधी है, अधर्म है साथ ही त्याज्य भी! इसी दृष्टि से महाभारत में आये अन्य पात्रों की स्थिति देखी जा सकती है पर ये सभी पात्र अपने व्यक्तित्व में विचित्र, उत्तेजक, प्रेरणाप्रद और मानवीय अनुभवों से भरे हैं। इनका एक धरातल महाभारत में वेदव्यास के शब्दों में व्यक्त होता है और उसके अतिरिक्त समय प्रवाह की

अनुकूलता-प्रतिकूलता में उनके अनेक स्वर उभरते हैं, इसीलिए महाभारत में यह भी कहा गया है कि यह ग्रंथ युगों तक कवियों, रचनाकारों को आंदोलित करता रहेगा।

महाभारत के पात्रों में यदि आश्चर्यजनक दिव्यानुभाव है तो उतना ही मानवानुभाव भी! चाहे धृतराष्ट्र हों, अर्जुन हों, भीष्म हों... सब कहीं-न-कहीं सर्वोच्च भाव भूमि पर प्रतिष्ठित होकर कहीं-न-कहीं सामान्य भी बन जाते हैं! वे सहर्ष अपने बड□प्पन की चादर पर छोटेपन का धब्बा लगने देते हैं जिससे उनकी सहजता और विश्वसनीयता बनी रह सके।

हमने इन अमर पात्रों को औपन्यासिक शैली में चित्रित करने का प्रयास किया है। यह उपन्यास नहीं है, न जीवन चरित्र... कहीं कुछ दोनों का संगम बन पड□ा है। हमने पूरा प्रयास किया है कि उनका महाभारतीय चरित्र यथावत बना रह सके और उनमें से मानवीय सहजता की अभिव्यक्ति भी हो सके।

हम कहां तक सफल हैं! जब तक आप पढ□ेंगे नहीं, कैसे पता चलेगा?

– डॉ. विनय
25, बैंग्लो रोड
दिल्ली-110007

कर्तव्यनिष्ठ कुन्ती

इस दारुण दृश्य की परिकल्पना इससे पहले किसी ने भी नहीं की होगी। नदी का किनारा सफेद वस्त्र पहने महिलाओं से भरा हुआ था। गिने चुने पुरुष, कुछ वृद्ध और कुछ बालक उनके बीच में इधर-उधर आते-जाते दिखाई दे रहे थे। पांचों पांडव, माता कुन्ती और द्रौपदी को साथ लेकर अपने बन्धुजनों को जलांजलि देने के लिए एकत्रित हुए थे।

कुन्ती द्रौपदी का सहारा लेकर बहुत सहमे-सहमे मन से युधिष्ठिर के पास आई। युधिष्ठिर को लगा कि मां कुछ कहना चाहती है। उन्होंने पूछा, “क्या बात है मां कुछ कहना है क्या?”

“हां वत्स यदि आज भी नहीं कह पाई तो फिर कब कहूंगी।”

“ऐसी कौन-सी बात है जिसके विषय में आप इस तरह से कह रही हैं। और आपका मन अशांत है।” युधिष्ठिर बोले।

“जब किसी बोझ को मन पर बहुत अधिक देर रखा जाता है तो ऐसा ही होता है।”

“आज्ञा दीजिए।”

युधिष्ठिर और मां को इस तरह उदास भाव से बात करते हुए देख कर शेष भाई भी वहीं आ गये। द्रौपदी कुछ जानी और अनजानी अनुभूतियों के साथ अतीत का एक चित्र देखने लगी। उसने सोचा कि हो न हो माताश्री कुछ न कुछ बहुत रहस्यमय बात कहना चाहती हैं।

युधिष्ठिर ने जैसे ही कुन्ती से कुछ पूछना चाहा वैसे ही कुन्ती उनसे बोली–“वत्स, जलांजलि देते हुए कर्ण को भी जलांजलि तुम्हें ही देनी होगी।”

युधिष्ठिर एकदम भौंचक्के रह गये और माता की आंखों में दृष्टि डाल कर कहने लगे–“क्या यह सच है?”

“मैं जानती हूं तुम्हें यह सुनकर कुछ विचित्र नहीं लगेगा। क्योंकि तुम स्वयं भूत और भविष्य का बहुत कुछ जानते हो, किन्तु हे पुत्र! कर्ण तुम सबका बड□ा भाई था और केवल मेरे द्वारा सत्य को स्वीकार न करने की हिम्मत के कारण उसे जीवन भर सूतपुत्र बनकर रहना पड□ा।”

“यह आप क्या कह रही हैं माता?” सभी पांडव एक साथ बोले।

“मैं जो समझती थी वही सच है।” द्रौपदी ने भी अपने आपसे कहा।

“हां वत्स! यह मुझ अभागे जीवन की एक रहस्य गाथा है जिसे कृष्ण, सूर्य के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता। यूं तो यह ऐसी बात है जिसे देवता तो जानते ही होंगे! कर्ण सूर्य के द्वारा मुझसे उत्पन्न पुत्र था जो तुम्हारे पिता पाण्डु से विवाह के पूर्व एक जिज्ञासावश उत्पन्न हुआ था।”

कुन्ती ने एक लम्बी सांस ली और कहा–“यह जो जीवन-भर उपेक्षित रहा है, जो हमेशा अर्जुन से द्वेष रखता था, जिसे द्रौपदी के स्वयंवर में सूतपुत्र कहकर स्वयं द्रौपदी ने अपमानित

किया और जो अपने ही भाई के द्वारा मारा गया वह कर्ण मेरा और सूर्य का पुत्र था। कर्ण को भी जलांजलि दो वत्स!"

"जलांजलि तो मैं दूंगा ही, किन्तु मां कर्ण के सम्बन्ध में जो कभी-कभी मेरे मन में आदर का भाव उठा करता था उसका कारण यही था। अनेक बार ऐसा लगता था जैसे रक्त की एक धारा दूसरी धारा को खींच रही है। बताओ मां इस पूरे आख्यान का शब्द-शब्द बताओ जिससे अपनी आंखों को आंसुओं से धोकर मैं कुछ पश्चाताप कर सकूं।"

"तुम्हें पश्चाताप करने की कोई आवश्यकता नहीं है। कष्ट मेरा था मैंने भोगा और यदि तुम कह ही रहे ही तो मैं आद्योपांत सारा वृत्तांत सुना देती हूं। मैं किस-किस तरह आत्ममंथन के मार्ग से निकली हूं यह मैं ही जानती हूं।"

युधिष्ठिर के हाथ में जल था। वह अपने भाई का तर्पण कर रहे थे और जैसे उनके सामने उस अतीत का दृश्य धीरे-धीरे बोलने लगा जिसके पात्र वे कई बार स्वयं रह चुके थे।

कुन्तिभोज का दरबार

राजा कुन्तिभोज का दरबार लगा हुआ था। दाएं-बाएं उच्चासनों पर सेनापति, मंत्री परिषद के सदस्य विराजमान थे। और सामने राज्य सिंहासन पर राजा कुन्तिभोज अपनी सम्पूर्ण आभा से विद्यमान थे। परिचारिका चंबर डुला रही थी। आज राजा के सामने हर्ष और भय का समान अवसर था। उनके विशेष दूत ने सूचना दी थी कि महर्षि दुर्वासा उनके राज्य में प्रवेश कर चुके हैं और कभी भी दरबार में आ सकते हैं।

महर्षि दुर्वासा को कौन नहीं जानता...उन क्रोधी मुनि को! प्रसन्न हों तो तीनों लोक की निधि दे दें और यदि प्राणी के दुर्भाग्य से अप्रसन्न हो जाएं तो क्रोधित होकर ऐसा शाप दें कि सर्वनाश हो जाए।

दरबार के अन्य सभासदों को भी संकेत से राजा ने बता दिया था कि एक ब्राह्मण आने वाले हैं। अत: आज प्रतिदिन का राजकार्य नहीं होगा। क्षमा और दण्ड की व्यवस्था महामंत्री स्वयं देख लेंगे। राजा अत्यंत उत्सुकतापूर्वक ब्राह्मण महाराज की प्रतीक्षा कर रहे थे। एक-एक क्षण बेचैनी से कट रहा था।

तभी अत्यंत ऊंचे कद के एक प्रचण्ड तेजस्वी ब्राह्मण उपस्थित हुए। उन्होंने दाढ□ी-मूंछ, दण्ड और जटा धारण कर रखी थी।

उनका स्वरूप देखने ही योग्य था। उनके सभी अंग निर्दोष थे। वे तेज से प्रज्जवलित होते से जान पड□ते थे। उनके शरीर की कान्ति मधु के समान पीले वर्ण की थी। वे मधुर वचन बोलने वाले तथा तपस्या ओर स्वाध्याय रूप सदगुणों से विभूषित थे।

उन महातपस्वी ने राजा कुन्तिभोज से कहा–"किसी से ईर्ष्या न करने वाले नरेश! मैं तुम्हारे घर में भिक्षान्त भोजन करना चाहता हूं, परन्तु एक शर्त है तुम या तुम्हारे सेवक कभी मेरे मन

के प्रतिकूल आचरण न करें। अनघ! यदि तुम्हें मेरी यह शर्त ठीक जान पड, तो उस दशा में मैं तुम्हारे घर में निवास करूंगा।"

"मैं अपनी इच्छा के अनुसार जब चाहूंगा, चला जाऊंगा और जब जी में आयेगा चला आऊंगा। राजन्! मेरी शैया और आसन पर बैठना अपराध होगा। अत: यह अपराध कोई न करे।"

तब राजा कुन्तिभोज ने बडी प्रसन्नता के साथ उत्तर दिया–"विप्रवर 'एवमस्तु'–जैसा आप चाहते हैं, वैसा ही होगा।" इतना कहकर वे फिर बोले–"हे तपस्वी! मेरे यहां मेरी पृथा नाम की एक यशस्विनी कन्या है, जो शील और सदाचार से सम्पन्न, साध्वी, संयम-नियम से रहने वाली और विचारशील है। वह सदा आपकी सेवा-पूजा के लिये उपस्थित रहेगी। उसके द्वारा आपका अपमान कभी न होगा। मेरा विश्वास है कि उसके शील और सदाचार से आप संतुष्ट होंगे।"

ऐसा कहकर उन ब्राह्मण देवता की विधिपूर्वक पूजा करके राजा ने अपनी विशाल नेत्रों वाली कन्या पृथा के पास जाकर कहा–

"वत्से! ये महाभाग ब्राह्मण मेरे घर में निवास करना चाहते हैं। मैंने 'तथास्तु' कहकर इन्हें अपने यहां ठहराने की प्रतिज्ञा कर ली है।"

"बेटी! तुम पर भरोसा करके ही मैंने इन तेजस्वी ब्राह्मण की आराधना स्वीकार की है, अत: तुम मेरी बात कभी मिथ्या न होने दोगी, ऐसी आशा है। तुम इनकी सेवा के लिए नियुक्त की गई हो।"

"ये प्रियवर महातेजस्वी, तपस्वी, ऐश्वर्यशाली तथा नियमपूर्वक वेदों के स्वाध्याय में संलग्न रहने वाले हैं। ये जिस-जिस वस्तु के लिये कहें, वह सब इन्हें ईर्ष्या रहित हो श्रद्धा के साथ देना।"

"क्योंकि ब्राह्मण ही उत्कृष्ट तेज है, ब्राह्मण ही परम तप है, ब्राह्मणों के नमस्कार से ही सूर्य देव आकाश में प्रकाशित हो रहे हैं।"

"माननीय ब्राह्मणों का सम्मान न करने के कारण ही महान असुर वातापि और उसी प्रकार तालजंघ ब्रह्मदण्ड से मारे गये।"

"अत: बेटी! इस समय सेवा का यह महान भार मैंने तुम्हारे ऊपर डाला है। तुम सदा नियमपूर्वक इन ब्राह्मण देवता की आराधना करती रहो।"

"माता-पिता का आनन्द बढाने वाली पुत्री। मैं जानता हूं, बचपन से ही तुम्हारा चित्त एकाग्र है। समस्त ब्राह्मणों, गुरुजनों, बन्धु-बान्धवों के साथ सदा यथोचित बर्ताव करती आयी हो। तुमने अपने सद्भाव से सबको प्रभावित कर लिया है।"

"निर्दोष अंगों वाली पुत्री! नगर में या अन्त:पुर में, सेवकों में भी कोई ऐसा मनुष्य नहीं है, जो तुम्हारे उत्तम बर्ताव से संतुष्ट न हो।"